# ॥ श्री हनुमंत स्तुति ॥

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं, जितेन्द्रियं, बुद्धिमतां वरिष्ठम् ॥
वातात्मजं वानरयुथ मुख्यं, श्रीरामदुतं शरणम प्रपद्धे ॥

## ॥ आरती ॥

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जाके बल से गिरवर काँपे, रोग-दोष जाके निकट न झाँके ॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई, संतन के प्रभु सदा सहाई ॥
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

दे वीरा रघुनाथ पठाए, लंका जारि सिया सुधि लाये ॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई ॥
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

लंका जारि असुर संहारे, सियाराम जी के काज सँवारे ॥
लक्ष्मण मुर्छित पड़े सकारे, लाये संजिवन प्राण उबारे ॥
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

पैठि पताल तोरि जमकारे, अहिरावण की भुजा उखारे ॥
बाईं भुजा असुर दल मारे, दाहिने भुजा संतजन तारे ॥
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

सुर-नर-मुनि जन आरती उतरें, जय जय जय हनुमान उचारें ॥
कंचन थार कपूर लौ छाई, आरती करत अंजना माई ॥
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

जो हनुमानजी की आरती गावे, बसहिं बैकुंठ परम पद पावे ॥
लंक विध्वंस किये रघुराई, तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

## ॥ इति संपूर्णम् ॥